ॐ

मन मोहिनी दिल बहार

याने

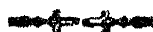
फाल्गुनोऽत्सव

भाग पहेला

कर्ता

मथुरामात्मज चंद्रकुंवर शर्मा

डीसाकेम्प ब्रह्मपुरी-नवा डीसा.



प्रसिद्ध कर्ता

मोहनलाल मगनिराम शर्मा

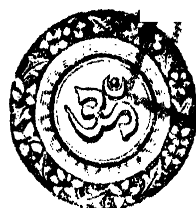
महामंदिर निवासी.



प्रत १०००　　　संवत १९८७

धी सूर्यप्रकाश प्रीन्टिंग प्रेसमां पटेल मूळचंदभाई त्रीकमलाले छापी. ठे. पानकोर नाका-अमदावाद.

किंमत ०-२-०



मन मोहिनी दिल बहार

याने

फाल्गुनो उत्सव.



भजन् तर्ज गालि न १

पहले गणपति देव मनावो सभा में आय
केरे धरलो गजानन्द्का ध्यान पूरण होवे सारे
काम जावे तुमरे विघ्न तमाम करलो तनमन
धनसे अर्चन चित लगाये केरें ॥ १ ॥ पहले ॥

गणपतिरणते भवनसे आये संगमे रीद्धि
सिद्धि दोनु लावे जांहां तांहा मंगल मोद् बढावे
फिरते विद्यामें प्रविण विघ्न हटाय केरे ॥ २ ॥

गणपति हे शिवजी के नन्दा सोवे ज्युं तारा विच चन्दा काटो लख चोरासिं फन्दा सोवे प्रत्यक्षण प्रणव स्वरुप शुंड केलायकेरे पहले ॥३॥

चलो सबगण पतिदेव मनावो उनको मोदक भोग लगावो जीससे मन इच्छा फल पावो गणपति सफल करे सवकाज चन्द्रवार केरे ॥ पहले

भजन तर्ज गाली नं. २

सवमिल सुमरो शङ्करदेव चरण चितलाय केरे सवमें देव वडा महादेव राकेसवभगतां किटेक करलो तनमन धनसे सेव आवो मन इच्छा फल पावो ज्ञान वनायके करे सवमि ॥ १ ॥

सव ब्रह्माहि सृष्टि उपजावे विष्णुपालन नित्य करावे रुद्र होय दुष्टनकु मारे समजो त्रिगुणी सब माया एक रहो न भुलाय केरं ॥ सवमि ॥२॥

जगमे इणातिनोकि मायारज गुणसत इणने फेलाया साचा प्रणवरुप दिखलायाध्यावो चोरासि कट जायके चन्द्रकुंवार केरे ॥ सवमि ॥३॥

इश्वर दीन दयाल हमतुम सव शंकर केवाल करले भोलाक्षणमें नेहाल आवो ध्यावो ध्यान लगावो कुंवर मनाय करे ॥ सव ॥ ४ ॥

भजन तर्ज गाली नं. ३

हां गोपीका सब मिल आवे जसुमतिसेति अर्ज सुनावे समजावे नादान कृष्ण नित हमें सतावेरें दधिवेचन मथुरा हम आये आय गेलमे सोर मचाये दधी चोरे मटफोरे कंसका डर नहि पावेरे ॥ १ ॥ हां गोपी.

वंशि वजाय मोहमन लीनो नाचदिखाय चित वसमे किनो भुलगइ घरकाज राजविन चैन न आवेरे ॥ हांगो ॥ २ ॥

सचित दहिकि मटकि फोडी चञ्चलता कि-
लडियां तोडी मोंडाइ वतलाय तिमिरपट घुंघट
खोलेरे ॥ हांगोपि ॥ ३ ॥

ज्युं नारि बन्दरि खिलावे त्युहि हमको व-
नमें मिठि बोली बोल लालतेरो मंत्र चलावेरे ॥
हांगोपि ॥ ४ ॥

यसुमति जन्म सफल भय हमरे पूर्व पुन्य
उदय भयेतुमरे घर अंगन में खेल लाल तेरो
कुंवर भगत कहावेरे ॥ हांगो.

भजन तर्ज गालि नं. ४

प्रभु तुमसे अर्ज हमारी हें चरण कमल
वलि हारी हें गर्भवाससे वहुदुख पायाकर कराल
भूतलमे हम आया देख गइ मति मारी हें
प्रभुतुमसे १

बालापनखेलमे खोया यंग भयो वाइफ
वश होया ओल्डभयो झखमारी हे प्रभुतुमसे २

कामक्रोध मोह अति चाया इर्षा द्वेष लोभ मन भाया त्रहि धर्मकि वात वीचारी हे प्रभु- तुमसे ॥ ३ ॥

आया रोगने किया मुकाम मनुष्य जन्म कर लिया वद्नाम अव निकल नाकि नही वारी हें ॥ प्रभु ॥ ४ ॥

त्राहि त्राहि दुख देख पडाहुं क्षमा करो प्रभु चरण गिराहुं तुम कुंवर करो रखवारी हे ॥ प्रभु तुमसे अर्ज हमारी हे ॥ ५ ॥

भजन तर्ज गालि नं. ५

उधो अबतो घनश्याम हमे दिखलाय देरे शिरपर मोर मुगट हद्चाजे कुन्डल काननबिच बिराजे छबीको देख मदन आति लाजे मुरली मन मोहनकी वाणि हमे सुनायदेरे ॥ उधो ॥१॥

पहरो पीताम्बर नंद्लाल चंमचंम चंमचंम

चाले संगम रेवे गो ओर ग्वाल वाकि झांकि कृष्ण कुंवरकि हमे कराय देरे ॥ उधो ॥ २ ॥

नहि जोगन हम वन जावे जाहां लग कृष्ण कुंवर नहि आवेवाहां लग अन्न पाणी नहि भावे उधो आजे हमारी सुनाय देरे ॥ उधो ॥ ३ ॥

प्रभुका प्रेम भयो भरपुर हुइ हम विरहनमे चकना चूर सुहावे कृष्ण कुंवरका नूर उधो चन्द्र-कुंवर वृजराज हमे दिखलाय देरे ॥ उधो अवतो श्री घमश्याम ॥ ५ ॥

भजन तर्ज गाली नं. ६

हां सखी मिल मोठ वदावे मन मोहनका ध्यान लगावे भगति राखे गुप्त कृष्णको गारी गारी गावेरे नाना भाति संगले आवे मनीवाराह हंस कहलावे कोतुक करे अपार नारि वन नृत्य करावेरे हां सखी प्रेम लगाय गोपिय मन चोरे

मोह लगाय प्रिति तोरे निर्मोहि भगवान हायतो-
थ दया न आवेरे हां सखी० प्रभुलिला खुब बढावे
जो गावे सो भवतर जावे कुंवर तु मारे चरण
कमल बलीहारी रे हां सखी.

विष्णु लीला खुब बढावे जो गावे सो भवतर
जावे कुंवर तुमारे चरण कमल बलीहारी कहावेरे

भजन तर्ज गालि चुनडीकी रंगतमे नं. ७

ओढो ओढोरे सुवागन सत्यकी ओढो चू-
नरी मलमल धर्म सनातन धार गोखरु सत्य कर्म
विचार पति वृत धर्म चढावो नार लगाकर दया
धर्मकी कोर सवागन ओढो चूनरी ॥ ओढो ॥१॥

सुरमो सुभ द्रस्टिको सार बिन्दि पति भ-
क्तिकि धार पटियोगलमे ससी संवार लगाशिर
सत्य सवागन कोर खुब खुल जावे चूनरी ॥
ओढो ॥ २ ॥

लेंगो लाज शर्मको कीजे गहणो शुभ लक्ष-णको लीजे पतिका चरण धोयनित पीजे थांने भवजल करसी पारके वह पतिवृता चूनरी ॥ ओढो ॥ ३ ॥

सासु सुसरा जेठ जेठाणि नणदल देवर ओर देराणि सबसे बोलो मिठि वाणी तन मन धन अर्पण करदो यहि पतिवृता चूनरी ॥ ओढो ॥ ४ ॥

घरमे बाल रुपसे रहजो लज्जा षटपुरुसो से किजो कामि दुस्ट पुरुससे डरजो भवजल लक्ष्मिजी कह लाय चन्द जन ओढो ओढो ॥५॥

भजन तर्ज गालि नं. ८

मेतो आयाहां सगाजी थारे प्रावणा हो मेतो आया थोरे द्वार सभी मील बेठा जाजम डाल पान सुफारी कर मनुहार व्या-

वण कर किरपा नित्य सत्य उपदेश सुणावणा हैं
॥ मे तो आयाहां ॥ १ ॥

सुणजो थे सतवंति नार मिनरखा देहरो करो
सुधार थेतो व्याहि जीरा लेजो नित वारणा हैं
मेतो आया हां ॥ २ ॥

पतिवृत धर्म कोइ जो धारे माता पिता अरु
पति कुल तारें जावे स्वर्ग विने पति प्यारे जग
जस होजा अटल सभी मनावणा हैं ॥ मेतो
आया ॥ ३ ॥

सीताथी पतिवृत्ता नार छोडा राजपाठ घर-
बार पतिसंग राखनेमें मनवार द्रौपदि सध्वी स्त्रीका
कुंवर चरित सुणावणा हैं ॥ हम० ॥४॥

भजन तर्ज गायन नं. ९

परनारी तेज कटारी हे मतभूल चूक कर
यारी हे परनारी रावण मनभाइ क्षणमें लंका नस्ट
कराइ भयो वालि नस्ट कारीहे पर. ॥ १ ॥

शुंभ निशुंभ परनारी मारे महिषासुरसे वीर पछाडे शिशुपाल नस्ट भयोभारीहे पर. ॥ २ ॥

भीष्म द्रोण दुर्योधन कर भारत गारत वंधू जव द्रोपदी चीर उतारी हे पर ॥ ३ ॥

सुरनर राक्षस थे बलकारी माता सवगा ते कहे चन्द्र यहसुमति हमारी हें परनारी ॥४॥

भजन तर्ज गालि नं. १०

हां नाररो नखरो भारी ज्युनामरदासु करं लाचारीरे, नाथुरामजी वाली लाडकी मोने लागे प्यारी रे, नाररो नखरो भारी यु नामदासु ॥ माथो धोयो शिश गुंथायो परण्यो पीव सेज नहि आयो कांइ कर्मनगत करी पिव नामर्दों लीखायो रे ॥ नाररो २ ॥

घणी कहुं पीव एक न माने घरमे ले समजावुं छाने पसवाडा सुवे जाय पिव नाहिं टांग उठावेरे॥ नाररो ३ ॥

चंगा मर्द देख मन चाले कामदेव मने फोडा घाले तडफु सारी रात सेजमें काम सतावे रे ॥ नाररो ४ ॥

सखी सहेल्यां पकडे पल्लो सारा शहरमें मच गयो हल्लो नामर्दो भरतार मिल्यो कांइ सेज रमावे रे ॥ नाररो ५ ॥

सी एल डी ने गाल बनाइ नामर्दाने आज सुनाइ जलदी करो उपाय नहि तो सान गमावे रे ॥ नाररो ६ ॥

गाली तर्ज गायन नं. ११

हाँ कवर शुकाहां से लाइ असली अंश पिता कोनाइ नथुराणजी वाली दिल मोह लियो मन सुहाइरे ॥ कवर १ ॥

करण अलोल कसोभा भारी मुखमे दांत बतीसी काली लिलवट चन्द्र उजास दासको जोवन चाइरे ॥ २ कवर ॥

बालजुड हद गूथी वेणि डग मुग जोवे डायर

नेणि मिरग लोचनसा नेन कोयल जीड गाइरे ॥ ३ कवर ॥

नैना अंजन सारो गोरी गालों पर पिन चकरी डोरी होटपे करां फुल जुल फन थांके आइरे ॥ ४ कवर ॥

छातियांरी वतियां कर राखी नीम्बु होय नारंगी पाकी दुध भरी छातियां आशक मत हात लगाइरे ॥ ५ कवर ॥

पेट देख मन संट चलावे जब आशक जी प्यारी पर आवे पेट रह्यो उड जात रातको कारण नाइरे ॥ ६ कवर ॥

हुओ कवर मुलकोमे जारी हम हस हस पुचत नर ओर नारी वदियो सासरे अंश कुवारीरे ॥ ७ कवर ॥

पेट मायने करो सगाइ थोंरा कवरजी मारी बाइ चन्द्र मिजलस सब वोटों बधाइरे॥८॥कवर॥

गायन तर्जे गाली नं. १२

मन मस्त हुअें मन होरीमें मजाहे मीठी बोलीमें नथुरामजी वालीहें नखराली मजाहे मीठी बोलीमें ॥ १ ॥ मन मस्तहुअे मनहोरीमे ॥

मन मस्त हुअे मन होरीमें मजाहे मीठी बोलीमें गाल देख घेवर झक मारे खुली दांत बिच चूप तू मारे पकी चीज दोय चोलीमें मजाहें मीठी बोलीमें ॥ २ ॥ मन मस्तहुअे मनहोरी में ॥

खुसी रहो प्यारी दिलजान गेरीयाँराँ राखों मान प्यारी रंग उडेला टोलीमें मजाहे मीठी बोलीमें ॥ ३ ॥ मन मस्त हुए मनहोरीमे ॥

पेट पानरे शम ज्युजान अद पतेरी हो कुल-वान प्यारी जंग करांला टोलीमें मजाहे मीठी बोलीमें ॥ ४ ॥

ठंठ चाल चले नखराली आवो पास देदे वोंताली प्यारी जादु भरा इस बोलीमें मजाहे मीठी बोलीमें ॥ ५ ॥

कयो मानलो खावो पान प्यारी जीरो राखो मान प्यारी लिंग धरोला योनिमें मजाहे मीठी बोलीमें ॥ ६ ॥

फागुणमें कर दोनी मेर वर्ष एक सु आशा फेर प्यारी वस रयो जीव इस बोलीमें मजाहे मीठी बोलीमें ॥ ७ ॥

डीयर जेसे नैन तुमारे बीयूटी फूलहे फेस तुमारे प्यारी रुप अजब हे कोरीमें मजाहे मीठी बोलीमे ॥ ८ ॥

ब्रह्म अस्वा डेका नरह वंका बाज रह्या फ-तेका डंका प्यारी कटे हे बम्बकी बोलीमें मजा हे मीठी बोलीमें ॥ ९ ॥

चन्द्रकूंवर हे प्रेमका प्यारा घायल फिरते लार तुमारा प्यारी वस रह्यो चित इस बोली में मजाहे मीठी बोलीमें ॥ १ ॥

भजन तर्ज गायन नं १३

हां नार [illegible] तारा घरमे नही प्रितम
का सारारे नार सुणसुण लो नाथुरामजी वाली
सबसु शोभा थारी निरालि गइ विदाता भुल खुला
ज्यु फुल हजारारे हांनार ॥ १ ॥

बेठ झीरोखे सबने देखे टेडा टेडा तर कस
नोखे देख यार किसो चला वेरे हानार ॥ २ ॥

घरकों खांवद ग्रुफुर मावे बारे मतना सांन
गमावे गज बन घर के माय चलावे गुप्त गुजारे
हांनार ॥ ३ ॥

हम कहिये डीसाके वासी थुकद मांसु प्रित
लगासी केहेते चन्द्रकुंवर उस्ताद नार नाचण
गारीरं हांनार ॥ ४ ॥

गाली तर्ज गायन नं. १४

यार रीझावण झेलुलार गइ के वावाहे ना-
थुरामजी वाली यार कीयोके वावाहे काची कां-

चली पेरी केसरीयां रखांतयां रंग शालु टीकी देय सींगोडो पाडु काजल कीसविद् सारु हे घर के धणिने समजाय लीयो के वावाहे ॥१॥

यार रीझावण सोख करे संको नही राखे घरमे रहे निसंक कुब्जा लोबन नहि हे ओरो ने राजी राखे हे घरके धाणिने धमकाय लीयो के वावाहे ॥२॥ याररीं जाव फजर ऊठ पाणीने जावे रस्तेमे करी आवे बालक बातसा जाग्यां पहलि पाची आप सोजावे हे घरके धणीने डराय लीयो के वावाहे ॥३॥ याररींजाव मिसि येयचु पोतु पेरे पान किसिविद् खावे होट मर्जीटसु लाल कीया के वावाहे ॥४॥ यार रींजाव कडियां उपर बेडी पेरे ठमकेसे थु चाले मुलकिरि पेरे वगर कि नाचण नहि शरमा वे हे चन्द्र कुंवरने गालव नाइ के वावाहें यार रीजा वण झेलु लार गइ के वावाहे ॥ ५ ॥

भजन तर्ज गायन

स्वराज्यका डंका गांधिजी बजवा दिया भारत भारतमें
खादिके वस्तर गांधिजी फेलादिया भारत भारतमें स्व०
दुनियामें अत्याचार हुआ जब विभुति अवतार हुआ
चरकेका हुन्नर गांधीजी खुलवा दिया भारतभारतमें स्व०
सब हिंदु भाइयो धीर धरो तब अपनि होगी वसुंधरा
प्रेमका प्याला गांधीजी पिलवा दिया भारतभारतमें स्व०
सत्याग्रहको सबमिल करना भाला बरछी गोली खाना
तृष्णि रुपवृत गांधिजी रखवा दिया भारतभारतमें स्व०
ईन्धनकी वृष्टि होतीथी वां खूनकी धारा वहतिथी
विदेशि वस्तर गांधिजी जलवा दिया भारतभारतमें स्व०
महातमाजीको पकड लीया ओर कारा भवनमें बंधकिया
लंडनमें देखो गांधिजी गांधिजी भारतभारतमें स्व०
प्रजामें हाहाकार मची जब भारत माता प्रगट हुई
खिलादकी टोपि गांधिजी पहेरादिया भारतभारतमें स्व०
जेल जातरा जवेंगे तब आजादि हम पावेंगे
हिंदुस्तानको जागृत करवादिया भारतभारतमें स्व०
दुनियांमे नहि कोई खेद रहे तब गांधिजी सीरदार रहे
वंदेमातरं गांधिजी लीखवा दिया भारतभारतमें स्व०
होलो विरो संग चलो ओर चंद्रकुंवर कटी बंद रहो
अमृतके बुंदे गांधिजी वर्षा दिया भारतभारतमें स्व०